

सार्वजनिक और निजी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि की तुलना करना

शीला सिंह^{1*}, डॉ. ममता रानी²

1 शोधार्थी, श्री कृष्ण विश्वविद्यालय, छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत

ouriginal.sku@gmail.com

2 सहायक प्रोफेसर, श्री कृष्ण विश्वविद्यालय, छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत

सार: शिक्षा प्रणाली में कंप्यूटर और इंटरनेट आधारित निर्देशों का उपयोग काफी आम है, लेकिन फिर भी एक सक्षम शिक्षक द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका को किसी भी गैजेट या तकनीक द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता है। शोधकर्ता अध्ययन के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए फतेहपुर जिले के दक्षिण और पूर्वी जिलों से डेटा एकत्र करना चुनेंगे। इस शोध में, 300 शिक्षक, पुरुष और महिला (सरकारी से 75 पुरुष शिक्षक और निजी से 75 पुरुष शिक्षक, सरकारी से 75 महिला शिक्षक और निजी से 75 महिला शिक्षक) अध्ययन का नमूना बनेंगे। अध्ययन में, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक आश्रित चर होंगे। शिक्षकों की नौकरी से संतुष्टि महत्वपूर्ण होगी, क्योंकि उनके काम के प्रति उनका रवैया छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। केवल संतुष्ट शिक्षक ही कक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं, और उनके शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार होता है। वे अधिक मेहनती बन जाते हैं और शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के प्रति अधिक प्रतिबद्धता दिखाते हैं। शिक्षकों ने यह भी महसूस किया कि अधिकांश माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों के लिए मार्गदर्शन और परामर्श शुरू करने की आवश्यकता होगी। अधिकांश शिक्षकों को अतिरिक्त प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी।

मुख्य शब्द : सार्वजनिक विद्यालय, निजी माध्यमिक विद्यालय, नौकरी, संतुष्टि, शिक्षक

परिचय

शिक्षा प्रणाली में कंप्यूटर और इंटरनेट आधारित निर्देशों का उपयोग काफी आम है, लेकिन फिर भी एक सक्षम शिक्षक द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका को किसी भी गैजेट या तकनीक द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता है। शिक्षक के व्यवहार और उसके व्यक्तिगत, व्यावसायिक और सामाजिक जीवन के साथ समायोजन का छात्रों और इस प्रकार समाज के निर्माण पर सीधा प्रभाव पड़ता है। आज का युग तकनीक का है और इस बढ़ती हुई हाईटेक दुनिया में शिक्षा भी तकनीक आधारित होती जा रही है। पेशे में बहुत अधिक शारीरिक और मानसिक थकान महसूस करने वाला या पेशे में पूरा सम्मान न पाने वाला शिक्षक खुद को हीन महसूस करेगा और छात्रों में आत्मविश्वास, साहस और नेतृत्व के गुणों को कभी विकसित नहीं कर पाएगा। एक सामाजिक रूप से कुसमायोजित शिक्षक कभी भी सहयोग, जिम्मेदारी, सामाजिक कार्यक्रमों में सामूहिक भागीदारी, साथी, समाज और देश के प्रति अपने दायित्व की भावना विकसित नहीं कर सकता है।

शिक्षक एक अच्छे व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और सामाजिक उन्नति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों की अपरिहार्य भूमिका को कम करके नहीं आंका जा सकता। कुशल शिक्षकों को सुरक्षित करना शिक्षा क्षेत्र की एक अंतर्निहित प्राथमिकता और जिम्मेदारी है। सक्षम शिक्षकों के साथ, अनुकूल शैक्षिक परिणाम प्राप्त करने की संभावनाएँ बहुत बढ़ जाती हैं। किसी कर्मचारी की नौकरी से संतुष्टि का आकलन करने का सबसे आम तरीका सीधे उनसे पूछना है कि क्या वे अपने काम से संतुष्ट हैं। इस दृष्टिकोण से, नौकरी की संतुष्टि को मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और पर्यावरणीय कारकों के संयोजन के रूप में वर्णित किया जा सकता है जो किसी व्यक्ति को ईमानदारी से यह कहने के लिए प्रेरित करते हैं, "मैं अपनी नौकरी से संतुष्ट हूँ।" नौकरी की संतुष्टि से तात्पर्य किसी व्यक्ति के अपने वर्तमान कार्य दायित्वों के प्रति समग्र सकारात्मक दृष्टिकोण से है। यह समझ बताती है कि नौकरी की संतुष्टि एक विलक्षण अवधारणा है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इस दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारक विविध नहीं हैं। किसी व्यक्ति के लिए अपनी नौकरी के एक पहलू से संतुष्ट होना और दूसरे से असंतुष्ट होना संभव है।

जब शिक्षक अपनी गतिविधि से खुश होते हैं तो वे अपने कर्तव्यों को अधिक ध्यान और प्रतिबद्धता के साथ निभा सकते हैं। इस वैश्विक दुनिया में, नौकरी से संतुष्टि एक महत्वपूर्ण मुद्दा रहा है। यह दुनिया भर में किसी भी शैक्षिक ढांचे के दीर्घकालिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। इस सेटिंग में नौकरी से संतुष्टि शिक्षक के मुद्दों को संबोधित करने और उनके काम/शिक्षण निष्पादन को बढ़ाने के लिए शिक्षण व्यवसाय की क्षमता है। ज्ञान, योग्यता और क्षमताएँ तब होती हैं जब कोई अपने आचरण में संतुष्ट महसूस करता है। इसलिए, अगर किसी कॉलेज शिक्षक को कॉलेज में उत्पादक गतिविधियाँ करनी हैं, तो उसके व्यवहार में संतुष्टि की आवश्यकता होती है।

साहित्य की समीक्षा

ए., गकोलिया और बेलियास, दिमित्रियोस (2014) वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य एक स्पष्ट चित्र प्रदान करना और सामान्य कर्मचारियों और शिक्षकों द्वारा अनुभव की जाने वाली नौकरी की संतुष्टि और आत्म-प्रभावकारिता के बीच संबंधों की जांच करना है, जैसा कि साहित्य समीक्षा के माध्यम से पता चलता है। नौकरी की संतुष्टि को कैसे परिभाषित किया जाना चाहिए, इस बारे में कोई आम सहमति नहीं लगती है, क्योंकि परिभाषा शोध विषय और प्रत्येक व्यक्ति की प्राथमिकताओं पर निर्भर करती है। पिछले दशकों के दौरान, नौकरी की संतुष्टि के कई अलग-अलग सिद्धांत और मॉडल विकसित किए गए हैं। इसके अलावा, नौकरी की संतुष्टि पर प्रभाव डालने वाले विभिन्न कारकों को अलग किया गया है, साथ

ही नौकरी की संतुष्टि से उभरने वाले कई परिणाम भी सामने आए हैं। इसके अलावा, आत्म-प्रभावकारिता की अवधारणा को कई अलग-अलग तरीकों से परिभाषित किया गया है। सामान्य तौर पर, एक शिक्षक को राष्ट्र के भविष्य को आकार देने के लिए जिम्मेदार सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक माना जाता है। समीक्षा से पता चलता है कि स्कूलों को शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि और आत्म-प्रभावकारिता में सुधार करने पर अधिक ध्यान देना चाहिए, उन कारकों की जांच और वृद्धि करनी चाहिए जो शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि और व्यक्तिगत प्रभावकारिता को बढ़ावा देते हैं। इसके अलावा, वर्तमान समीक्षा शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि और आत्म-प्रभावकारिता को मापने के लिए उपकरणों के बारे में जानकारी प्रदान करती है। समीक्षा से पता चलता है कि शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि के विभिन्न कारक आपस में जुड़े हुए हैं और शिक्षकों की प्रभावकारिता के विभिन्न कारकों पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। निष्कर्षों के भविष्य के अनुभवजन्य शोध के लिए निहितार्थ और सुझाव भी निकाले गए हैं।

अकबर, मुहम्मद और शाह, एट अल (2011)। वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध की जांच करना था। द्वितीयक उद्देश्य भावनात्मक बुद्धिमत्ता में विद्यार्थियों के विभिन्न जनसांख्यिकीय चरों की भूमिका की जांच करना था, जिसमें लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, माता-पिता की शिक्षा और भौगोलिक उत्पत्ति शामिल थी। बार-ऑन इमोशनल कोशेंट इन्वेंटरी का उद्देश्य डेटा संग्रह करना था। प्रतिभागियों की शैक्षणिक उपलब्धि को उनके वार्षिक परिणामों के माध्यम से मापा गया। परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के लिए पियर्सन सहसंबंध और टी-परीक्षण लागू किया गया। निष्कर्ष परिकल्पनाओं के अनुरूप हैं। दोनों संरचनाओं के बीच सार्थक संबंध पाया गया। पहले जन्मे विद्यार्थियों ने बाद में जन्मे विद्यार्थियों की तुलना में भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर उच्च अंक प्राप्त किए। साक्षर माता-पिता वाले विद्यार्थियों ने अशिक्षित माता-पिता वाले विद्यार्थियों की तुलना में उच्च अंक प्राप्त किए। शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों ने ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च अंक प्राप्त किए।

अख्तर, शफकत और हाशमी, मुहम्मद और नकवी, सैयद। (2010)। वर्तमान अध्ययन सार्वजनिक और निजी स्कूल के शिक्षकों में नौकरी की संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए किया गया था। 'नौकरी की संतुष्टि' से तात्पर्य लोगों के अपने काम के प्रति दृष्टिकोण और भावनाओं से है। नौकरी के प्रति सकारात्मक और अनुकूल दृष्टिकोण नौकरी की संतुष्टि को इंगित करते हैं। नौकरी के प्रति नकारात्मक और प्रतिकूल दृष्टिकोण नौकरी से असंतुष्टि को इंगित करते हैं। शोध इस बात का समर्थन करते हैं कि शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि को उनके काम के प्रति सकारात्मक शिक्षण व्यवहार से संबंधित बहुत महत्वपूर्ण चर में से एक पाया गया है। किसी व्यक्ति की नौकरी की संतुष्टि और उसके जीवन के अन्य

पहलुओं के साथ संतुष्टि के बीच जटिल संबंधों में भी काफी रुचि रही है। यह परिकल्पना की गई थी कि सार्वजनिक और निजी स्कूल के शिक्षकों में नौकरी की संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए। इस परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए शोधकर्ता ने शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि की भावना की जांच करने के लिए यह अध्ययन किया। इस उद्देश्य के लिए शोधकर्ता ने 25 वस्तुओं और 5 विकल्पों की एक प्रश्नावली विकसित की। अध्ययन के लिए 150 सार्वजनिक और निजी स्कूल के शिक्षकों का एक नमूना सुविधाजनक रूप से चुना गया था। डेटा विश्लेषण 'टी-टेस्ट' और 'एनोवा' के माध्यम से किया गया था, जिसने दिखाया कि सार्वजनिक और निजी स्कूलों में शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

अकोमोलाफे, मोयोसोला. (2020). नाइजीरिया में शिक्षकों के बीच नौकरी से संतुष्टि की कमी एक बड़ी समस्या है, जो शिक्षा के कई हितधारकों को बड़ी चिंता में डाल रही है। शिक्षकों के लिए अपनी नौकरी में प्रभावी होने के लिए आवश्यक सही व्यक्तित्व लक्षण और विशेषताएं उपलब्ध लोगों में से गायब प्रतीत होती हैं। इसलिए अध्ययन ने नाइजीरिया के ओन्डो राज्य में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि के भविष्यवक्ता के रूप में व्यक्तित्व प्रकारों की जांच की। अध्ययन के लिए सर्वेक्षण प्रकार के वर्णनात्मक शोध डिजाइन को अपनाया गया था। अध्ययन में 62 पुरुषों और 138 महिलाओं सहित दो सौ (200) माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों ने भाग लिया। इस अध्ययन के लिए अपनाए गए उपकरण बिग फाइव इन्वेंटरी और जॉब सैटिसफैक्शन स्केल हैं। पांच परिकल्पनाएं तैयार की गईं और 0.05 महत्व के स्तर पर परीक्षण किया गया। एकत्र किए गए डेटा के विश्लेषण के लिए वर्णनात्मक और अनुमानात्मक सांख्यिकी का उपयोग किया गया। यह निष्कर्ष निकाला गया कि बहिर्मुखता, सहमति और कर्तव्यनिष्ठा व्यक्तित्व प्रकार यूजेओई वॉल्यूम 3 नंबर 1 (जून, 2020) 93 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि की भविष्यवाणी करने वाले प्रमुख कारक थे। अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर, यह अनुशंसा की गई थी कि स्कूल प्रशासकों को जब भी भर्ती की जाती है, तो उन्हें शिक्षण नियुक्ति के लिए बहिर्मुखता, सहमति और कर्तव्यनिष्ठा व्यक्तित्व वाले आवेदकों पर विचार करना चाहिए।

डॉ. सपना त्रिपाठी (2023) इस शोध पत्र में सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की 'कार्य संतुष्टि' (Job Satisfaction) का अध्ययन किया गया है। भारत में जल्द ही 'नई शिक्षा नीति 2020' लागू होने वाली है, लेकिन इसके बावजूद, भारी कार्यभार और तनावपूर्ण माहौल के कारण निजी स्कूलों के शिक्षकों की स्थिति अभी भी दयनीय बनी हुई है। अधिकांश स्कूलों में, उन्हें सरकारी स्कूलों में कार्यरत अपने समकक्षों की तुलना में बहुत कम वेतन दिया जाता है। चूंकि किसी भी शैक्षणिक संस्थान के

संस्थागत और शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में 'शिक्षक' सबसे महत्वपूर्ण तत्व होता है, इसलिए सरकार का यह कर्तव्य है कि वह शिक्षकों के अनुकूल नीतियां बनाए, विशेष रूप से निजी क्षेत्र के लिए। इसलिए, इस अध्ययन की परिकल्पना विभिन्न प्रकार के प्रबंधन के अंतर्गत कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि की तुलना करने के उद्देश्य से की गई है। अध्ययन से यह पता चला कि निजी स्कूलों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, सरकारी स्कूलों के शिक्षकों की तुलना में काफी कम है। सरकार को निजी क्षेत्र के शिक्षकों की स्थिति में सुधार लाने के लिए सक्रिय नीतियां बनानी चाहिए।

कार्यप्रणाली

शोध के लिए विधि और प्रक्रिया बहुत महत्वपूर्ण होती है। बिना किसी योजना के कोई भी शोध सफलतापूर्वक नहीं किया जा सकता। शोध साहित्य के पत्रों पर ऐसे कई पुख्ता सबूत हैं, जहाँ शोधकर्ता समस्याओं के अध्ययन में अलग-अलग तरीकों का इस्तेमाल करके अलग-अलग निष्कर्ष पर पहुँचे।

जनसंख्या के प्रतिनिधि अनुपात को नमूना कहा जाता है। एक अच्छा नमूना तीन चीजें सुनिश्चित करता है; पूर्वाग्रह से मुक्ति, जनसंख्या का प्रतिनिधित्व, जनसंख्या गुणों के संदर्भ में विशेषताएँ और पर्याप्तता। वर्तमान अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, शोधकर्ता ने उत्तर प्रदेश के पूर्वी और दक्षिणी जिले से डेटा एकत्र करने का फैसला किया। इस प्रकार 300 पुरुष और महिला शिक्षकों (सरकारी से 75 पुरुष शिक्षक और निजी से 75 पुरुष शिक्षक, सरकारी से 75 महिला शिक्षक और निजी से 75 महिला शिक्षक) को वर्तमान अध्ययन के नमूने के रूप में बनाया गया। वर्तमान अध्ययन में, स्वतंत्र चर नौकरी की संतुष्टि और नौकरी का तनाव हैं। वर्तमान अध्ययन में, आश्रित चर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक हैं। शोध करने में कई डेटा एकत्र करने वाले उपकरणों की आवश्यकता होती है। चयनित उपकरण प्रासंगिक क्षेत्र से कुछ प्रकार के साक्ष्य या सूचना या डेटा के संग्रह के लिए उपयुक्त होना चाहिए।

डेटा का विश्लेषण

निम्न तालिका उत्तर प्रदेश के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कर रहे 300 शिक्षकों की संख्या और प्रतिशत के साथ-साथ उनकी संतुष्टि की डिग्री को दर्शाती है।

तालिका 1: उत्तर प्रदेश के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में कार्य संतुष्टि (N=300)

अंक	संख्या एवं प्रतिशत	संतुष्टि की डिग्री
74 और उससे अधिक	69 (22.97%)	पूर्ण रूप से संतुष्ट
63 – 73	133(44.02%)	बहुत संतुष्ट
56 – 62	57 (19.14%)	मध्यम रूप से संतुष्ट
48 – 55	32 (10.77%)	संतुष्ट नहीं
47 या उससे कम	9(3.11%)	अत्यंत असंतुष्ट

जांच का पहला उद्देश्य उत्तर प्रदेश में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि का अध्ययन करना था। यह डॉ. अमर सिंह और डॉ. टीआर शर्मा द्वारा विकसित नौकरी संतुष्टि पैमाने का उपयोग करके किया गया था। पैमाने की मैनुअल में दिखाए गए संतुष्टि की डिग्री की तालिका के आधार पर, तालिका संख्या - 1 से पता चलता है कि उत्तर प्रदेश के 300 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में से, 22.97% को उनके शिक्षण कार्य से अत्यधिक संतुष्ट पाया गया, जबकि उनमें से 44.02% बहुत संतुष्ट पाए गए, 19.14% शिक्षक मध्यम रूप से संतुष्ट थे, 10.77% संतुष्ट नहीं थे और उत्तर प्रदेश के माध्यमिक विद्यालय के शेष 3.11% शिक्षक अत्यधिक असंतुष्ट पाए गए। इसका मतलब है कि माध्यमिक विद्यालय के अधिकांश शिक्षक 44.02% अपने काम से बहुत संतुष्ट थे।

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि पर अंकों का वितरण तालिका 2 में दिया गया है

तालिका 2: माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में नौकरी से संतुष्टि

कक्षा अन्तराल	आवृत्ति	को PERCENTAGE	संचयी आवृत्ति
361-370	1	0.5	100
351-360	1	0.5	99.5
341-350	0	0.0	99.0
331-340	0	0.0	99.0
321-330	7	2.5	99.0
311-320	4	1.5	96.5
301-310	10	3.5	95.0
291-300	10	3.5	91.5
281-290	28	9.5	88.0
271-280	43	14.5	78.5
261-270	55	18.5	64.0
251-260	39	13.0	45.5
241-250	31	10.5	32.5
231-240	25	8.5	22.0
221-230	25	8.5	13.5
211-220	9	3.0	5.0
200-210	6	2.0	2.0
	300	100	100
उच्चतम स्कोर			= 364
सबसे कम स्कोर			= 208
श्रेणी			= 156

तालिका 2 में नौकरी की संतुष्टि के लिए आवृत्ति वितरण से पता चलता है कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच परिवर्तनशील नौकरी की संतुष्टि पर स्कोर 156 की सीमा में वितरित किया जाता है। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि स्कूल के शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि के स्तर में भिन्नता है। इसलिए यह परिकल्पना कि, "माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है इसलिए परिकल्पना" स्वीकार की जाती है।

तालिका से यह भी पता चलता है कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए परिवर्तनशील नौकरी संतुष्टि पर अंकों के वितरण की प्रकृति कमोबेश एक जैसी है। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि 64.5 प्रतिशत शिक्षक क्रमशः 250 से 320 के अंकों के बीच आते हैं, जो सीमित सीमा में अंकों की लगभग समान सांद्रता को दर्शाता है।

निम्न तालिका 3 उत्तर प्रदेश के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन करने वाले पुरुष एवं महिला अध्यापकों के बीच नौकरी से संतुष्टि की डिग्री को दर्शाती है

तालिका 3: उत्तर प्रदेश में पुरुष और महिला माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की नौकरी से संतुष्टि

पुरुष शिक्षक संख्या = 150	महिला शिक्षक संख्या = 150	संतुष्टि की डिग्री
43(28.91%)	25 (16.90%)	पूर्ण रूप से संतुष्ट
61 (41.23%)	70 (46.86%)	बहुत संतुष्ट
24 (15.64%)	34 (22.71%)	मध्यम रूप से संतुष्ट
17 (10.90%)	16 (10.63%)	संतुष्ट नहीं
5 (3.32%)	5 (2.90%)	अत्यंत असंतुष्ट

जैसा कि तालिका 3 में दिखाया गया है, अध्ययन से पता चलता है कि 150 उत्तर प्रदेश में पुरुष माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों में से 28.91% अत्यधिक संतुष्ट थे, 41.23% बहुत संतुष्ट थे, 15.64% मध्यम रूप से संतुष्ट थे, 10.90% संतुष्ट नहीं थे और उनमें से 3.32% को अत्यधिक असंतुष्ट के रूप में पहचाना गया था। दूसरी ओर, उनकी 150 महिला समकक्षों में से 16.90% अत्यधिक संतुष्ट पाई गईं, 46.86% बहुत संतुष्ट थीं, 22.71% मध्यम रूप से संतुष्ट थीं, 10.63% संतुष्ट नहीं थीं और शेष 2.90% अत्यधिक असंतुष्ट थीं। उत्तर प्रदेश में अत्यधिक संतुष्ट और बहुत संतुष्ट संतुष्टि की श्रेणी में आने वाले पुरुष माध्यमिक

विद्यालय शिक्षकों का कुल प्रतिशत 70.14% है जो महिला शिक्षकों के 63.76% से अधिक है। इससे पता चलता है कि उत्तर प्रदेश में पुरुष माध्यमिक विद्यालय शिक्षक अपनी शिक्षण नौकरी में महिला माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की तुलना में अधिक संतुष्ट हैं। ये निष्कर्ष गव्खर एवं सचदेवा (1987), क्रॉसमैन एवं हैरिस (2006) तथा मुहम्मद, जेगाक एवं बालकृष्णन (2009) द्वारा किए गए निष्कर्षों से भी मेल खाते हैं।

निम्न तालिका 4 उत्तर प्रदेश में निजी और सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि की डिग्री को दर्शाती है।

तालिका 4: उत्तर प्रदेश में निजी और सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की नौकरी से संतुष्टि

निजी शिक्षक संख्या = 150	सरकारी शिक्षक संख्या = 150	संतुष्टि की डिग्री
35 (22.75%)	35 (23.19%)	पूर्ण रूप से संतुष्ट
63 (42.65%)	69 (45.41%)	बहुत संतुष्ट
29 (19.43%)	28 (18.84%)	मध्यम रूप से संतुष्ट
18(11.85%)	14(9.66%)	संतुष्ट नहीं
5(3.32%)	4(2.90%)	अत्यंत असंतुष्ट

उनके स्थान के संबंध में, तालिका 4 से पता चलता है कि उत्तर प्रदेश में निजी माध्यमिक विद्यालय के 22.75% शिक्षक और सरकारी माध्यमिक विद्यालय के समान 22.75% शिक्षक अत्यधिक संतुष्ट थे, निजी माध्यमिक विद्यालय के 42.65% शिक्षक और सरकारी माध्यमिक विद्यालय के 45.41% शिक्षक बहुत संतुष्ट थे, निजी माध्यमिक विद्यालय के 19.43% शिक्षक और सरकारी माध्यमिक विद्यालय के 18.84% शिक्षक मध्यम रूप से संतुष्ट थे, निजी माध्यमिक विद्यालय के 11.85% शिक्षक और सरकारी माध्यमिक विद्यालय के 9.66 शिक्षक संतुष्ट नहीं थे, जबकि निजी माध्यमिक विद्यालय के 3.32% शिक्षक और सरकारी माध्यमिक विद्यालय के 2.90% शिक्षक अपने शिक्षण कार्य से अत्यधिक असंतुष्ट पाए गए। परिणाम से पता चलता है कि उत्तर प्रदेश में सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक, जिनमें से कुल 68.6% अत्यधिक संतुष्ट और बहुत संतुष्ट संतुष्टि की श्रेणी में आते हैं, उन्हें निजी माध्यमिक विद्यालय के 65.4% शिक्षकों की तुलना में नौकरी की संतुष्टि अधिक है

निष्कर्ष

उत्तर प्रदेश में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि की पहचान डॉ. अमर सिंह और डॉ. टीआर शर्मा द्वारा विकसित नौकरी संतुष्टि पैमाने (जेएसएस) के अनुप्रयोग के माध्यम से की गई थी। यह संतुष्टि की डिग्री के अत्यधिक संतुष्ट और बहुत संतुष्ट श्रेणियों में आने वाले सभी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों को उच्च नौकरी संतुष्ट माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के रूप में लेकर किया गया था। उत्तर प्रदेश में कुल 280 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों को उनके शिक्षण कार्य से उच्च संतुष्टि के रूप में वर्गीकृत किया गया था। कुल 58 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक जो संतुष्टि की डिग्री के असंतुष्ट और अत्यधिक असंतुष्ट श्रेणियों में आते हैं, उन्हें कम नौकरी संतुष्ट माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के रूप में लिया गया है।

संदर्भ

1. ए., गकोलिया और बेलियास, दिमित्रियोस और कौस्टेलियोस, अथानासियोस। (2014)। शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि और आत्म-प्रभावकारिता: एक समीक्षा। यूरोपीय वैज्ञानिक जर्नल। 10. 321-342।
2. अकबर, मुहम्मद और शाह, असगर और खान, एजाज और अख्तर, मसूद और रियाज, मुहम्मद। (2011)। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध। पाकिस्तान जर्नल ऑफ साइकोलॉजी।
3. अख्तर, शफकत और हाशमी, मुहम्मद और नकवी, सैयद। (2010)। माध्यमिक स्तर पर सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों में नौकरी की संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन। प्रोसीडिया - सामाजिक और व्यवहार विज्ञान। 2. 4222-4228। 10.1016/j.sbspro.2010.03.668।
4. अकोमोलाफे, मोयोसोला और फारेमी, यिनूसा और बोलानले, एस्वातिनी और ओनीनीचुकु, चुकुका। (2020)। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि के पूर्वानुमान के रूप में बड़े पाँच व्यक्तित्व प्रकार।
5. अकोमोलाफे, मोयोसोला. (2020). नाइजीरिया के ओसुन राज्य के माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की प्रभावशीलता के लिए नौकरी की संतुष्टि का संबंध।

6. अंजुम, आयशा और पैदीपति, स्वाति (2017)। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव पर एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी। 4. 10.25215/0403.114।
7. अरुमुगासामी, जी. और आर. सैम रेणु, डॉ. (2013)। कन्याकुमारी जिले में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की नौकरी से संतुष्टि। इंडियन जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च। 3. 187-189। 10.15373/2249555X/FEB2013/65।
8. अवस्थी, पल्लवी. (2019). भारत में पब्लिक स्कूल के शिक्षकों के बीच भावनात्मक श्रम. 10.1007/978-3-030-24823-9_12.
9. अज़हर, महमूद और सायरा, नुदरत और असदक खान बर्सल, राणा मुहम्मद मुसऊद। (2011)। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की नौकरी से संतुष्टि: लिंग, शहरी और ग्रामीण विद्यालयों का तुलनात्मक विश्लेषण। एशियाई सामाजिक विज्ञान। 7. 203-203। 10.5539/ass. v7n8p203।
10. बलियान, सोम और बलियान, प्रीतिका और मोकोएना, सेलो। (2018)। बोत्सवाना के निजी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों के बीच व्यावसायिक तनाव: कारण और परिणाम। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन। 10. 32. 10.5296/ije. v10i2.13085।
11. बिक-हर, लैम और यान, होई-फाई। (2011)। शुरुआती शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि: स्कूल-आधारित कारकों का प्रभाव। शिक्षक विकास। 15. 333-348. 10.1080/13664530.2011.608516।
12. ब्रेडी, जूड और विल्सन, ऐलेन। (2021)। इंग्लैंड में राज्य और निजी स्कूल के शिक्षकों के लिए तनाव के स्रोतों की तुलना करना। स्कूलों में सुधार। 25. 136548022110247. 10.1177/13654802211024758।
13. सिरोकी, आंद्रेज और अनम, सियाफिउल और रेत्नानिग्ड्याह, प्रतिवी और सोडेन, बिल. (2023). महामारी से पहले और उसके दौरान इंडोनेशियाई माध्यमिक विद्यालय के अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि को मापना: एक मिश्रित-विधि अध्ययन. दूसरी या विदेशी भाषा के रूप में अंग्रेजी पढ़ाना--TESL-EJ. 27. 10.55593/ej.27106a1.

14. डॉ. सपना त्रिपाठी (2023) सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि का एक तुलनात्मक अध्ययन।
15. कुमारी, एम., और चौधरी, एस. (2019). सीनियर सेकेंडरी स्कूल शिक्षकों में कार्य संतुष्टि. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 9(6), 106– 115.
https://www.ijmra.us/project%20doc/2019/IJRSS_JUNE2019/IJMRA-15626.pdf से प्राप्त.